Krishna Nand M.A III sem's ①

प्र. – जैविक चिकित्सा को लिखें क्या है? या जैविक चिकित्सा की विशेषता बतलाते हुए किन्हीं दो प्रमुख प्रविधियों का मूल्यांकन प्रस्तुत करें।

Ans :—

जैविक चिकित्सा में असामान्य व्यवहार या मानसिक विकृति का उपचार करने के लिए कुछ दैहिक या मेडिकल विधियों का प्रयोग किया जाता है। इसलिए इसे मेडिकल चिकित्सा भी कहा जाता है। मनः चिकित्सा की प्रविधियों का विकास मुख्य रूप से मनः स्नायुविकृति से पीड़ित रोगियों की चिकित्सा हेतु किया गया है। मनः चिकित्सा की प्रविधियाँ मनोविकृति (Psychosis) से पीड़ित रोगियों की चिकित्सा हेतु अधिक उपयोगी नहीं है। इसका मुख्य कारण है कि मनोविकृति (Psychosis) से पीड़ित रोगी इतने भयंकर रूप से बीमार होते हैं कि वे अभियोजन के नए तरीके को सीखने में असमर्थ रहते हैं। ये बड़े शंकालु, उत्तेजित या उदासीन रहते हैं। फलतः चिकित्सक के साथ सहयोग नहीं कर पाते। अतः मनोचिकित्सकों द्वारा उपलब्ध करवाए गए चिकित्सा-सत्रों का इन रोगियों पर विशेष लाभ नहीं हो पाता है। इसलिए मनोविकृति से ग्रस्त रोगियों के लिए जैविक चिकित्सा का विशेष महत्व हो जाता है। जैविक प्रविधियों की खास विशेषता या महत्व यह होता है कि इन प्रविधियों से रोगी प्रथमतः स्वस्थ हो जाय या कम-से-कम उसके मानसिक स्वास्थ्य में इतना सुधार आ जाय कि उनकी मनः चिकित्सा की जा सके।

आधुनिक मनोरोग विज्ञानियों द्वारा दैहिक या जैविक चिकित्सा को मुख्य रूप से तीन अधोंकित भागों में बाँटा गया है —

(i) औषधि चिकित्सा (Pharmacotherapy)
(ii) आघात चिकित्सा (Shock therapy)
(iii) मनोशल्य चिकित्सा (Psychosurgery)

Krishna Nand M.A III Sem's (2)

औषधि चिकित्सा (pharmacotherapy)

औषधि चिकित्सा में कुछ विशेष प्रकार के रसायनों द्वारा रोगी का उपचार किया जाता है। फलतः इसे रसायन चिकित्सा की भी संज्ञा दी गई है। इन रसायनों के रोगानुसार नियंत्रित मात्रा में रोगी को दिया जाता है जिससे वे धीरे-धीरे ठीक होकर अपने पारिवारिक एवं सामाजिक समायोजन को ठीक कर लेते हैं और सामान्य जीवन जीने के योग्य हो जाते हैं। रोग के प्रकृति के अनुसार सामान्यतः इन रसायनों या औषधियों को तीन भागों में विभक्त किया गया है, जो क्रमशः अग्रांकित हैं—

(I) वृहत् प्रशान्तक (Major tranquilizers) —
वृहत प्रशान्तक द्वारा मनोविदलता (Schizophrenia) एवं स्थिर व्यामोह (Paranoia) से ग्रस्त रोगियों का उपचार अधिक सफलता पूर्वक किया जाता है। इससे स्पष्ट होता है कि वृहत प्रशान्तक रसायनों से मनोविक्षिप्त व्यवहारों पर अधिक सफलता से काबू पाया जा सकता है। गुडमैन (Goodman, 1985) द्वारा ऐसे वृहत प्रशान्तकों के तीन प्रकार हैं— फेनोथियाजिन (Phenothiazine), ब्युटरोफेनोन्स (Butyrophenones) और थाइऑक्सानथिन्स (Thioxanthenes)। इन औषधियों के सेवन से रोगियों की संवेगात्मक उग्रता एवं संवेगात्मक क्षुब्धता में कमी आती है।

(II) लघु प्रशान्तक (minor tranquilizer) —
लघु प्रशान्तक उपयोग रोगी की मानसिक चिन्ता को कम करने के लिए किया जाता है। इस प्रकार की औषधियों में प्रोपानेडिओलस (Propanediols) और बेन्जोडियाजेपिन्स का प्रचलन अधिक है। इन रसायनों का रोगी को सेवन करवाने से उनमें चिन्ता को नियन्त्रित करने में काफी सफलता मिलती है। फलतः

रोगी में चिन्ता एवं तनाव में काफी आ जाती है।

(III) विषाद विरोधी औषधियाँ (Anti depressant drugs) — इस तरह के औषधियों का प्रयोग रोगी के चित्तवृत्ति (mood) में होने वाले परिवर्तनों में विषाद, खुशी आदि के उपचार के लिए किया जाता है। वस्तुतः इस प्रकार के रसायनों का प्रयोग मनोदशा विकृति के एकध्रुवीय प्रकार यानि विषाद से पीड़ित रोगियों की चित्तवृत्ति को सामान्य करने के लिए किया जाता है। ऐसी औषधियों में ट्रिसाइक्लिक्स (Tricyclics), मोनोआमाइन आक्सीडेज (monoamine oxidase or MAO) प्रमुख हैं। अभी हाल के वर्षों में एक नया विषाद विरोधी औषध भी विकसित किया गया है जिसे SSRIs (Selective Serotonin Reuptake Inhibitors) कहा गया है। प्रोजैक (Prozac) इस समूह का एक औषधि है जिसे न केवल विषाद बल्कि कुछ व्यक्तित्व विकृतियों के उपचार में भी सफलता पूर्वक प्रयोग किया गया है। इस औषधि की अधिक सफलता के कारण इसे अद्भुत रसायन (wonder drug) की संज्ञा दी गई है।

औषधि या रसायन चिकित्सा का लाभ यह है कि इससे मानसिक रोग के लक्षण जल्दी से दूर होते दिखाई पड़ते हैं। इन रसायनों का प्रभाव केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र पर तथा शरीर के चयापचयी प्रक्रियाओं पर सीधे पड़ता है। यह चिकित्सा विधि सर्वथा दोष मुक्त नहीं है। इन रसायनों का पार्श्व प्रभाव भी रोगियों में देखने को मिलता है।

आघात चिकित्सा (Shock therapy) —

आघात चिकित्सा विधि मनोविकृति (Psychoses) से पीड़ित रोगियों की चिकित्सा के लिए आज कल एक सफल प्रविधि मानी